ऐ गिरोहे उलमा! कह दो
मैं नहीं जानता
मौलाना ह़सन नूरी गोंडवी
SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

ऐ गिरोहे उलमा! कह दो
मैं नहीं जानता
मौलाना ह़सन नूरी गोंडवी
SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

بسم اللہ الرحمن الرحیم
اللہ کے نام سے شروع جو نہایت مہربان، رحمت والا ہے۔

मैं नहीं जानता

लेखक	: मौलाना ह़सन नूरी गोंडवी
ज़ुबान	: हिंदी
मौज़ू	: इस्लाह़
हिंदी तर्जुमा	: अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल ट्रांस्लेशन डिपार्टमेंट
प्रूफ रीडिंग	: मुह़म्मद रियाज़ क़ादरी
प्रकाशक	: साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन
कंपोज़िंग एंड डिज़ाइनिंग	: प्योर सुन्नी ग्राफिक्स
सना इशाअ़त	: मई 2022, शव्वाल1443 हिजरी
सफ़ह़ात	: 8
क़ीमत	: ---

Sabiya Virtual Publication

Powered by Abde Mustafa Official

Contact : +919102520764 (WhatsApp)

Mail : abdemustafa78692@gmail.com

Contents

मुझे भी पढ़ लीजिये

(अज़ मुहम्मद साबिर इस्माईली क़ादरी, रज़वी अल मारूफ़ अब्दे मुस्तफ़ा)

ये रिसाला अगर्चे बहुत मुख़्तसर सा है लेकिन बहुत ही अहम मस'अले पर लिखा गया है, उलमा और अवाम सबको चाहिए कि इस पर अमल करें। जो बात मालूम ना हो उस के मुताल्लिक़ साफ़-साफ़ कह दें, "मैं नहीं जानता" और इसी में आफ़ियत है। सिर्फ़ इतना कह कर हम कई मसाइल को पैदा होने से रोके सकते हैं बल्कि यूँ कह लीजिए कि किसी फ़ितने को सिर्फ़ इस छोटे से जुमले तले दबा सकते हैं।

आज हालात ऐसे हैं कि पढ़े लिखे लोगों को लगता है कि वो कुछ ज़्यादा ही पढ़े लिखे हैं और किसी मस'अले पर ला इल्मी का इज़हार गोया बहुत शर्म की बात है। एक तरफ़ मदारिस से फ़ारिग़ हज़रात की एक बड़ी तादाद है जो अपने आप को फ़ारिग़ होने के बाद हुसूले इल्म से ही फ़ारिग़ समझती है और ये गुमान इन्हें एक बड़ी हलाकत की तरफ ले जाता है।

दूसरी तरफ़ वो मुबल्लिगीन हज़रात जिन्हें लगता है कि वो फारिगुत तहसील हज़रात से ज़्यादा जानते हैं और इस गुमान में वो क़ौम के मुफ़्ती बन बैठे हैं और अपनी अक़्ल से शरई अहकाम बयान करते हैं। ये वो बातें हैं कि जिन की वजह से अवामे अहले सुन्नत में इख़्तिलाफात की कसरत हुई है। अब चूँकि गिरोह बंदी भी बहुत बढ़ चुकी है तो उलमा - ए- मुहक़्क़िक़ीन की बातें समझ में नहीं आती।

अब हो ये रहा है कि ऐसे नाबालिग़ फ़क़ीह हज़रात हर हर मस'अले में अपनी टाँग अड़ाने में लगे हुए हैं और कसरत से जवाब देते हैं, जवाब देने के शौक़ में ये भूल जाते हैं कि इन्हें एक जवाब ये भी देना है "मैं नहीं जानता" लेकिन ये जवाब दें भी कैसे? नफ़्स पर गिरां जो गुज़रता है और फिर गुज़रेगा क्यों नहीं कि इल्म के बड़े-बड़े दावे जो कर बैठे हैं और फिर दावत भी दे रहे हैं सवाल पर सवाल करने की फिर कैसे कहेंगे कि "मैं नहीं जानता", इन लोगों ने दीन को बहुत नुक़्सान पहुँचाया है और इन्हें लगता है कि ये फ़ायदा पहुँचा रहे हैं।

फ़तवा कौन दे? शरई मसाइल कौन बयान करे?

फ़तवा देना ऐसा तो नहीं है कि हर शख़्स कुछ किताबें पढ़ कर शुरू हो जाए। हमें तो ये बिल्कुल दुरुस्त नहीं लगता,अगर आप इसे अच्छा समझते हैं तो आप ने दीन को एक खेल समझ रखा है। ये तो आप भी मानते हैं कि यहाँ बहुत बारीकियाँ हैं फिर ऐसा कैसे कहा जा सकता है कि हर शख़्स फ़ुलाँ फ़ुलाँ किताब पढ़कर मसाइल हल कर सकता है? हमने जो पढ़ा सुना है, इस से तो यही समझ मे आता है कि पहले बहुत इल्म हासिल किया जाए, फ़िर असातिज़ा ये तय करेंगे कि ये फ़तवा देने के क़ाबिल हुआ है या नहीं, फिर ये भी कि वो किसी मुफ़्ती की निगरानी में फ़तवा लिखे, तजुर्बा हासिल करे फिर इस के बाद उसे मुस्तकिल क़रार दे दिया जाए तब वो फ़तवा नवेसी करे। अकाबिरीन के बारे में पढ़ने पर भी आपको यही मिलेगा कि उन्होंने इस मुआमले में हद दर्जा एहतियात फ़रमाई। अब हाल ये है कि ना किसी उस्ताद ने फ़तवा लिखना सिखाया, ना कोई तजुर्बा है, ना किसी की रहनुमाई है, ना किसी माहिर मुफ़्ती की निगरानी में इफ़्ता किया है और ना किसी ने मुस्तकिल क़रार दिया है, बस अपने गुमान में ही मुस्तकिल बनकर फ़तवा नवेसी जैसे अहम शोबे में हाथ डाल दिया और ऐसा ना करेगा मगर खुद को हलाक करने वाला।

अल्लाह त'आला हमें हिदायत पर क़ाइम रखे।

अब्दे मुस्तफ़ा

ए गिरोहे उलमा कह दो "मैं नहीं जानता"

ए गिरोहे उलमा! आप से कोई शख़्स सवाल करे और आप को इस का इल्म ना हो तो बरमला कह दो "मैं नहीं जानता" या "मुझे मालूम नहीं" ये इस से बेहतर है कि आप ग़लत मस'अला बयान करके अपनी दुनिया व आख़िरत तबाह कर बैठें।

मुझे नहीं मालूम कहने से ना आप की इज़्ज़त कम होगी और ना ही आप जाहिल क़रार पाएँगे।

हमारे बुज़ुर्गों का भी यही शेवा था कि जब किसी मस'अले का इल्म ना होता तो बरमला कह देते "मैं नहीं जानता"।

चंद बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल मुलाहिज़ा फ़रमाएं :

मसरूक़ कहते हैं कि :

अब्दुल्लाह बिन मस'ऊद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स इल्म रखता है वो बोले और जो नहीं रखता वो साफ कह दे कि :

"मैं नहीं जानता अल्लाह जानता है।"

मज़ीद फ़रमाया कि :

ये भी इल्म ही की बात है कि आदमी ना जाने तो कह दे कि अल्लाह जानता है।

अल्लाह त'आला का इरशाद है

قُلْ مَآ اَسْــَٔـلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّ مَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ

(سورہ ص:86)

तर्जुमा : तुम कह दो कि मैं किसी मुआविज़ा का तालिब नहीं हूँ और मैं तकल्लुफ़ नहीं करता।

नाफ़े'अ कहते हैं कि :

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा से एक बात दरयाफ़्त की गई जो आप को मालूम ना थी, आप ने फ़रमाया कि "मैं नहीं जानता"

अतिया कहते हैं कि :

एक शख़्स ने हज़रते इब्ने उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से मीरास का सहल सा सवाल किया।

फ़रमाया कि "मैं नहीं जानता"

वो आदमी उठ कर चला गया, किसी ने अर्ज़ किया कि हज़रत आप बता दिए होते। फ़रमाया कि वल्लाह "मैं नहीं जानता।"

यह्या बिन सईद कहते हैं कि:

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा के किसी साहिबज़ादे से कोई बात दरयाफ़्त की गई, उस का इल्म उनके पास ना था। मैने कहा कि बड़ी हैरत की बात है, एक इमामे हिदायत का आप जैसा आलिम व फ़ाज़िल फ़रज़न्द हो और उस के पास भी किसी मस'अले का इल्म ना हो, फ़रमाया कि अल्लाह के नज़दीक और अल्लाह की मारिफ़त रखने वालों के नज़दीक इस से भी ज़्यादा बड़ी बात ये है कि बग़ैर इल्म के कलाम करो, या ग़ैर मुअतबर रावी की हदीस नक़्ल करो।

हज़रते इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु त'आला अन्हु कहा करते थे :

अगर कोई आलिम "मैं नहीं जानता" कहने में चूक जाए तो वो अपनी क़त्ल गाह में जा पहुँचा।

हज़रते इब्ने इजलान का क़ौल इमाम मालिक नक़्ल करते हैं कि :

जब आलिम "ला अदरी" ना कह सका तो समझ लो कि अपने मक़्तल में पहुँच गया।

ये रिवायत इमाम मालिक से इमाम शाफ़ई ने और उन से इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमहुल्लाहु ने नक़्ल की।

उलमा के कुछ अहवाल और सिफ़ात :

उलमा के कुछ अहवाल व सिफ़ात हैं जिन्हें हर वक़्त पेशे नज़र रखना ज़रूरी है, इस की एक मुख़्तसर फ़ेहरिस्त ये है :

(1) तलबे इल्म में इस की निय्यत क्या होनी चाहिये, किसलिए वो इल्म की तहसील करे।

(2) इल्म का वाफिर हिस्सा जब उसे खुदा की जानिब से अता हो जाए तो फिर उसके ज़िम्मे क्या हुक़ूक़ आइद होते हैं।

(3) उलमा के साथ मजालिस व हम नशीनी किस तौर पर करना चाहिये।

(4) जिन उलमा से इल्म हासिल कर रहा है उनके साथ ताल्लुक़ात की नोइयत क्या होनी चाहिये और तलबा -ए- इल्म के साथ उस का क्या सुलूक होना चाहिये।

(5) अगर इल्म के बाब में मुनाज़िरे की नौबत आ जाए तो क्या तर्ज़े अमल होना चाहिये।

(6) अगर मसनदे इफ़्ता पर फ़ाइज़ हो जाए तो इसके हुक़ूक़ व आदाब क्या हैं?

(7) उमरा व हुक्काम की मजलिस में जाना पड़े तो क्या करना चाहिये? नीज़ ये कि किन लोगों की मुशाबिहत मुफ़ीद होगी और किन की मुज़िर।

(8) अवामुन्नास और कम पढ़े लिखे लोगों के साथ ताल्लुक़ किस तरीके का होना चाहिये।

(9) फिर उस का मुआमला अपने परवरदिगार के साथ किस तरह होना चाहिये, उसे ये मालूम होना चाहिये कि ख़ुदा की इबादत क्यों कर हो। हर एक के हक़ को इस तरह तरतीब दे कि खुदा के हक़ में कोई कोताही ना हो, बल्कि इसे फ़ौकियत हासिल रहे। (माखूज़ अख़लाक़ुल उलमा)

आज कल लोग उलमा -ए- किराम से वो मसाइल पूछते हैं जिसे ना जानना ज़रूरी और ना ही बताना और उन मसाइल से आगाही बिल्कुल हासिल नहीं करते जिन का जानना उन पर फ़र्ज़ और वाजिब है।

एक साहिब ने सवाल किया कि चाँद पर पहुँचने के बाद नमाज़ किस तरह पढ़ी जाएगी?

जब कि उन का मुआमला ये था कि ज़मीन पर रहते हुए भी ईदुल फ़ित्र व ईदुल अज़्हा के अलावा कभी मस्जिद में देखा ना गया था।

अख़लाक़ुल उलमा में है कि फ़ुज़ैल बिन ज़ियाद कहते हैं कि एक शख़्स ने इमाम अहमद बिन हम्बल से बा इसरार मुश्किल मसाइल दरयाफ़्त किए, इमाम ने फ़रमाया ये तुम 2 ग़ुलामों, 2 आदमियों की बात क्या पूछ रहे हो?

नमाज़ और ज़कात के बाब में कुछ पूछो जिस से तुम्हें नफ़ा हो, अच्छा बताओ कि रोज़दार को एहितलाम हो गया तो मस'अला क्या है?

उस ने कहा कि मैं नहीं जानता, फ़रमाया कि जिस चीज़ से नफ़ा है उसे तो पूछते नहीं और 2 आदमियों और 2 ग़ुलामों के मुताल्लिक़ पूछ रहे हो, फिर इमाम ने हज़रते हसन बसरी के हवाले से फ़रमाया कि एहितलाम होने से रोज़े में ख़लल नहीं पड़ता। हज़रते जाबिर बिन ज़ैद से एहितलाम का मस'अला दरयाफ़्त किया गया, तो फ़रमाया कि रोज़े में कुछ नुक़्सान नहीं अलबत्ता आँख खुलने के बाद ग़ुस्ल करने में देर नहीं करनी चाहिये। हम समझते हैं कि अगर हज़राते उलमा खुद को भी इन आदाब का पाबंद और खूगर बनाएँ,

जिनके पाबंद आइम्मा -ए- मुस्लिमीन रहे हैं तो खुद भी इल्म से नफ़ा अंदोज़ हो और दूसरों को भी फ़ायदा पहुँचा सकेंगे और थोड़े इल्म में हक़ त'आला बरकत अता फ़रमाएगा और वो मंसबे इमामत पर उस की बरकत से फ़ाइज़ हो सकता है।

ला इल्मी का एतिराफ़ :

आलिम से अगर कोई ऐसी बात पूछी जाए जिस का उसे इल्म नहीं तो ला इल्मी का इज़हार व एतिराफ़ में कोई शर्म व आर नहीं महसूस करनी चाहिये, यही तरीक़ा सहाबा -ए- किराम और अइम्मा -ए- मुस्लिमीन का रहा है।

इस बात में उन हज़रात को नबी -ए- करीम अलैहिस्सलाम का इत्तिबा हासिल रहा है, क्योंकि आप से भी कोई ऐसी बात दरयाफ़्त की जाती जिस का इल्म आप को बा ज़रिया -ए- वही ना हो चुका होता तो आप बे तकल्लुफ़ फ़रमा देते "मुझे इस का इल्म नहीं" ये बात हर उस के ज़िम्मे लाज़िम है जिस से कोई मस'अला पूछा गया और उस के पास इस का यक़ीनी इल्म नहीं बस वो कह दे कि :

"अल्लाह को मालूम, मैं नहीं जानता।"

हरगिज़ तकल्लुफ़ से कियास आराई ना शुरू कर दें क्योंकि ये बात खुदा के नज़दीक भी क़ाबिले तारीफ़ है और अहले अक़्ल के नज़दीक भी।

अख़लाक़ुल उलमा, पेज 65 पर है कि एक रोज़ अली बिन अबी तालिब रदिअल्लाहु त'आला अन्हु हमारे पास इस हाल में तशरीफ़ लाए कि शिकम मुबारक पर हाथ फेर रहे थे, और फ़रमा रहे थे कि जिगर में कैसी खनकी (ठंडक) है, मुझ से एक बात पूछी गई जो मुझे मालूम ना थी मैने कह दिया कि :

"मैं नहीं जानता, अल्लाह जानता है।"

हमारी किताबें हिंदी में

(1) बहारे तह़रीर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इल्मी तहक़ीक़ी और इस्लाही तहरीरों पर मुश्तमिल एक गुलदस्ता जिसके अब तक 14 हिस्से रिलीज़ हो चुके हैं, हर हिस्से में 25 तहरीरें हैं जो मुख्तलफ़ मौज़ूआत (टॉपिक्स) पर हैं।

(2) अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई हवालों से साबित किया गया है कि अल्लाह त'आला को ऊपर वाला या अल्लाह मियाँ कहना जाइज़ नहीं है।

(3) अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक वाक़िए की तहक़ीक़ पेश की गई है जिस में हज़रते बिलाल के अज़ान ना देने पर सूरज ना निकलने का ज़िक्र है।

(4) इश्क़े मजाज़ी (मुंतख़ब मज़ामीन का मजमुआ) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई अहबाब के मज़ामीन शामिल किये गए हैं जो इश्के मजाज़ी के ताल्लुक़ से हैं, इश्के मजाज़ी के मुख़्तलफ़ पहलुओं पर ये एक हसीन संगम है।

(5) गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो! - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस मुख़्तसर से रिसाले में गाने बजाने की मज़म्मत पर कलाम किया गया है और गानों के कुफ्रिया अशआर बयान किये गए हैं जिसे पढ़ कर कई लोगों ने गाने बजाने से तौबा की है।

(6) शबे मेराज गौसे पाक - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक मशहूर वाक़िए की तहक़ीक़ बयान की गई है जिस में हज़रते ग़ौसे आज़म का शबे मेराज हमारे नबी अलैहिस्सलाम से मिलने का ज़िक्र है।

(7) शबे मेराज नालैन अर्श पर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक वाक़िए की तहक़ीक़ पेश की गई है जिस में मेराज की शब हुज़ूर नबी -ए- करीम अलैहिस्सलाम का नालैन पहन कर अर्श पर जाने का ज़िक्र है।

(8) हज़रते उवैस क़रनी का एक वाक़िया - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में हज़रते ओवैस क़रनी के अपने दंदान शहीद कर देने वाले वाक़िए की तहक़ीक़ बयान की गई है और साथ ये भी कि अल्लाह के आख़िरी रसूल अलैहिस्सलाम के दंदान शहीद हुए थे या नहीं और हुए तो उसकी कैफ़ियत क्या थी और कई तहक़ीक़ी निकात शामिले बयान हैं।

(9) डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला मज्मुआ है उन फ़तावा का जो हज़रते अल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादरी अलैहिर्रहमा ने डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी के लिये लिखे हैं, ये फ़तावा डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी की गुमराही को बयान करते हैं।

(10) ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई दलाइल से साबित किया गया है कि सहाबा के अलावा भी तरद्दी (यानी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु) का इस्तिमाल किया जा सकता है।

(11) चंद वाक़ियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

वाक़ियाते कर्बला के हवाले से अहले सुन्नत में बेशुमार वाक़ियात ऐसे आ गए हैं, जो शिओं की पैदावार हैं, इस रिसाले में हमने चंद वाक़ियात की तहक़ीक़ पेश की है जो कि अपनी नोइयत का मुन्फ़रिद काम है, इस तहक़ीक़ी रिसाले में कई इल्मी निकात मरक़ूम हैं।

(12) बिन्ते हव्वा (एक संजीदा तहरीर) कनीज़े अख़्तर

औरत की ज़िंदगी में पैदाइश से ले कर निकाह और फिर बादहू के मामलात की इस्लाह के लिये इस रिसाले को एक अलग अंदाज़ में लिखा गया है।

(13) सेक्स नॉलेज (इस्लाम में सोहबत के आदाब) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस्लाम में जिंसी ताल्लुक़ात और इस हवाले से जदीद मसाइल पर ये रिसाला बड़े ही आम फ़हम अंदाज़ में लिखा गया है और आसान होने के साथ-साथ ये रिसाला दलाइल से मुज़य्यन भी है।

(14) हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाक़िए पर तहकी़क़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ मशहूर वाक़ियात की तहक़ीक़ पर ये रिसाला लिखा गया है, कई हवालों से अस्ल रिवायत और उनकी कैफ़ियत को अम्बिया की अज़मत को मद्दे नज़र रखते हुए बयान किया गया है।

(15) औरत का जनाज़ा - जनाबे ग़ज़ल साहिबा

औरत के जनाज़े को कौन कौन देख सकता है? क्या शौहर काँधा नहीं दे सकता? और ऐसे कई सवालात के जवाब आपको इस रिसाले में मिलेंगे।

(16) एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

एक आशिक़ की बड़ी दिलचस्प कहानी है जिस में मज़ाह है, तफ़रीह है, सबक़ है और इबरत है। इस वाक़िए को अल्लामा इब्ने जौज़ी की किताब "ज़म्मुल हवा" से लिया गया है।

(17) आईये नमाज़ सीखें (पार्ट 1) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस किताब में नमाज़ पढ़ने और इससे मुताल्लिक़ ज़्यादा से ज़्यादा मसाइल को जमा करने की कोशिश की गई है, इस्तिलाह़ात को आसान अंदाज़ में बयान किया गया है, इस के अगले हिस्सों पर भी काम जारी है।

(18) क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में इस बात की तफ़्सील बयान की गई है कि क़ियामत के दिन लोगों को माँ के नाम के साथ पुकारा जाएगा या बाप के नाम से।

(19) शिर्क क्या है? - अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही

शिर्क के मौज़ू पे एक बेहतरीन किताब है जिस में शिर्क का असल मफ़हूम बयान किया गया है।

(20) इस्लामी तअ़लीम (हिस़्सा अव्वल) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अ़मजदी रहमतुल्लाह अलैह

ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।

(21) मुहर्रम में निकाह - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में बयान किया गया है कि माहे मुहर्रम में भी निकाह जाइज़ है और इसे नाजाइज़ कहना बिल्कुल गलत है, मुहर्रम में ग़म मनाना ये कोई इस्लामी रस्म नहीं और चाहे घर बनाना हो या मछली, अंडा और गोश्त वग़ैरह खाना सब मुहर्रम में जाइज़ है।

(22) रिवायतों की तहकी़क़ (पहला हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला अहले सुन्नत में मशहूर रिवायतों की तहक़ीक़ पर मुश्तमिल है, इस में रिवायतों की तहक़ीक़ बयान की गई है, सहीह रिवायतों की सिह्हत पर और बातिल रिवायतों के मौज़ू व बेअस्ल होने पर दलाइल पेश किये गये हैं, इस के और भी हिस्सों पर काम जारी है।

(23) रिवायतों की तहकी़क़ (दूसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिवायतों की तहक़ीक़ का दूसरा हिस्सा है, इस के और भी हिस्सों पर काम जारी है।

(24) ब्रेक अप के बाद क्या करें? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला उन नौजवानों के लिये लिखा गया है जो इश्के मजाज़ी में धोखा खा कर अपनी ज़िंदगी के सफ़र को जारी रखने के लिये राह तलाश कर रहे हैं।

(25) एक निकाह ऐसा भी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये एक सच्ची कहानी है, एक निकाह की कहानी, इस में जहाँ इस्लामी तरीके से निकाह को बयान किया है वहीं इस पर अमल की कोशिश भी की गई है।

है तो ये एक कहानी पर इस में आप तहक़ीक़ी निकात भी मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे।

(26) काफ़िर से सूद - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में आप पढ़ेंगे कि एक काफ़िर और मुसलमान के दरमियान सूद की क्या सूरतें हैं? और साथ ही लोन, बैंक और पोस्ट इंटरेस्ट पर उलमा -ए- अहले सुन्नत की तहक़ीक़ भी शामिले रिसाला है।

(27) मैं खान तू अंसारी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस्लाम में क़ौम, ज़ात और बिरादरी वग़ैरह की अस्ल पर ये एक तहक़ीक़ी किताब है, इस में मसवात को क़ाइम करने की तरग़ीब दिलाई गई है, कुफ़ू के मसअले पर तहक़ीक़ी मवाद भी शामिले किताब है।

(28) रिवायतों की तहक़ीक़ (तीसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिवायतों की तहक़ीक़ का तीसरा हिस्सा है, इस के 2 हिस्सों का ज़िक्र हम कर आये हैं, इसके चौथे हिस्से पर काम जारी है।

(29) जुर्माना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला माली जुर्माने के मुताल्लिक़ लिखा गया है, माली जुर्माना फ़िक़्हे हनफ़ी में जाइज़ नहीं है और इसे दलाइल से साबित किया गया है।

(44) ला इलाहा इल्लल्लाह, चिश्ती रसूलुल्लाह? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला औलिया की एक खास हालत के बयान में है जिसे "सुकर" और "शत्हिय्यात" वग़ैरह से ताबीर किया जाता है।

इस ताल्लुक़ से अहले सुन्नत के मुअतदिल मौक़िफ़ को दलाइल के साथ बयान किया गया है।

ये रिसाला उनके लिये दावते फिक्र है जो इफ़रातो तफ़रीत के शिकार हैं।

(31) हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी

ये रिसाला औरतों के मख़सूस मसाइल पर मुश्तमिल है।

(32) रमज़ान और क़ज़ा -ए- उमरी की नमाज़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये मुख़्तसर सी तहक़ीक़ इस बयान में है कि क्या रमज़ान के आखिरी जुम्आ में किसी नमाज़ के पढ़ने से सारी क़ज़ा नमाज़ें माफ़ हो जाती हैं? इस तरह की रिवायतों की क्या अस्ल है?

(33) 40 अहादीसे शफ़ाअत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस रिसाले में शफ़ाअते मुस्तफ़ा के हवाले से 40 हदीसें लिखी गई हैं।

(34) बीमारी का उड़ कर लगना - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

ये किताब इस बात की तहक़ीक़ पर है कि बीमारी उड़ कर लग सकती है या नहीं यानी किसी एक को हुआ मर्ज़ किसी दूसरे में मुंतक़िल हो सकता है या नहीं।

(35) ज़न और यक़ीन - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा बरेलवी

ये रिसाला ज़न और यक़ीन के अहकाम पर लिखा गया है, इल्मे फ़िक़्ह पढ़ने वालों के लिये इस में कई इल्मी निकात हैं जिनसे वस्वसों को दूर किया जा सकता है।

(36) ज़मीन साकिन है - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस किताब में साबित किया गया है कि ज़मीन हरकत नहीं करती बल्कि ये साकिन (ठहरी हुई) है।

(37) अबू तालिब पर तहक़ीक़ - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस किताब में अबू तालिब के ईमान के मसअले पर जम्हूर अहले सुन्नत का मौक़िफ़ पेश किया गया है, यही मौक़िफ़ तहक़ीक़ से साबित है कि अबू तालिब ने इस्लाम क़ुबूल नहीं किया था।

(38) क़ुरबानी का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी

इस रिसाले में क़ुरबानी के फ़ज़ाइल और फ़िक़्ही मसाइल हैं जो कि बहारे शरीअत से माख़ूज़ हैं।

(39) इस्लामी तालीम (पार्ट 2) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

ये इस्लामी तालीम का दूसरा हिस्सा है ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।

(40) सफ़ीना -ए- बख़्शिश - ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान

ये किताब हुज़ूर ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान बरेलवी के कलाम का मज्मूआ है।

ABOUT US

Abde Mustafa Official is a team from **Ahle Sunnat Wa Jama'at** working since 2014 on the Aim to propagate **Quraan and Sunnah** through electronic and print media.

We are :

blogging, publishing books and pamphlets in multiple languages on various topics, running a special matrimonial service for Sunni Muslims.

Visit our official website :

www.abdemustafa.in

about thousands of articles & 200+ pamphlets and books are available in multiple languages.

E Nikah Matrimony

if you are searching a Sunni life partner then **E Nikah** is a right platform for you.

Visit **www.enikah.in**

Or join our Telegram Channel

t.me/enikah (search "E Nikah Service" in Telegram)

Follow us on Social Media Networks :

/abdemustafaofficial

For more details WhatsApp **+91 91025 20764**

OUR BRANDS :

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

enikah
E NIKAH MATRIMONY SERVICE